वसन्त जमशेदपुरी

१

चंद्रकिरण छिटकी है या फिर तूने घूँघट सरकाया है।
चकित चकोरे-सा मैं देखूँ, मन मेरा यों भरमाया है।

मेघ सरीखे कुंतल तेरे, जैसे घिर आया हो सावन,
लहरा कर मुख पर यों छाए पूर्णचंद्र ज्यों शरमाया है।

बल खाती नाहर-कटि कितने रक्तपात करवाएगी यह,
तू क्या जाने इस पागल ने कैसे मन को समझाया है।

अधरों पर शतदल न्यौछावर स्वयं अनंग खड़ा दिल थामे,
आँखें मीचे सोच रहा है किस विधना की यह माया है।

नयनों से वारुणी छलकती नारी हो या हो मधुशाला,
छोड़ दिया मधुघट, मदिरालय जो तेरी चौखट आया है।

२

महकी है यह रजनीगंधा या तेरे तन की खुशबू है।
अलकें लहराई हैं तूने या चंदन-वन की खुशबू है॥

तेरी इस उन्मुक्त हँसी पर तीनों लोक निछावर शुभदे।
तेरे अधरों से निःसृत यह नंदन कानन की खुशबू है॥

कस्तूरी-मृग-सा चंचल मैं इधर-उधर नजरें दौड़ाऊँ।
अब तक समझ नहीं पाया क्यों यह तेरे मन की खुशबू है॥

डरता हूँ तेरी गलियों में एक अजब-सा है सम्मोहन।
अभिसारी आकर्षण इसमें,मृदु परिरंभन की खुशबू है॥

कालिंदी के कूल मिले हम,पूर्णचंद्र को देखा जी भर।
मेरी मुरली तेरी पायल अब तक छन-छन की खुशबू है॥

डॉ. अंकुर सहाय "अंकुर"

१

इधर नहीं गया ? अरे ! उधर नहीं गया।
उस ओर ढूंढिए ज़रा जिधर नहीं गया।

मालिक ने दिखाया जिसे बाहर का रास्ता
मैं पूछता हूं क्यों अभी बाहर नहीं गया ?

कब तक रहेगा मुफ़्त मिले इस मकान में ?
इक माह गए बीत..अभी घर नहीं गया?

निष्काम! निठल्ला! फ़रेबी और जुआरी !
सब सुन के उसका कान अभी भर नहीं गया ?

हैं आप पड़ोसी तो ज़रा देख आइए!
चुल्लू में पानी डूब के वो मर नहीं गया ?

२

तुम अपना ईमान न बेचो।
अंतस का इंसान न बेचो।

जिसके टुकड़ों पर पलते हो ,
उसका ही सम्मान न बेचो।

गांधी ख़ाकी श्वेत और कम
कपड़ों से ढक आन न बेचो।

मानवता का परचम थामो
गीता औ' कुरआन न बेचो।

बात एक "अंकुर" की मानो
प्यारा हिन्दुस्तान न बेचो॥